प्रति,

सम्माननीय विशुद्धचेता महानुभाव,

काशी मरणानमुक्ति का मैंने गंभीर अध्ययन किया। पुस्तक के अक्षर और उनमें अंतस्थ आत्मा ने मुझमें भी प्रवेश किया मेरी पात्रतानुसार। गंभीर मनोवृत्ति के प्रकाशक आलोक जी ने भी बताया तथा अतिशय गहिर गंभीर . शिर्डी साँई नाथ प्रेमी भीतर के साधु भीतर में साधु लेखक मनोज जी से बात भी करवाया। मनोज और रश्मि दोनों शिर्डी साँई नाथ के दिव्य कर कमलों की लेखनी के निमित्त बने ऐसा मेरी भी समझ में आया। निश्चय ही पुस्तक ने दर्शन के गंभीर पक्षों को उजागर किया है और यह गंभीर समीक्षा की भी अपेक्षा रखती है। खैर ....

हममें प्रभू हैं, प्रभू में हम हैं, जय हो प्रभू में पूरी जागरूकता एवं आत्मचेतना सहित। और हाँ लेखकद्वय और प्रकाशक भी पुस्तक के नायकवत् महा महान हैं। एतदर्थ मेरी कतिपय रचनायें (तीन शीर्षकों से) समर्पित हैं।

डॉ. परशुराम तिवारी
प्राध्यापक एवं
परास्नातक दर्शन विभागाध्यक्ष
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)
मोबा.नं.– 9179484530

<u>शीर्षक :–कालजयी सदबुद्धी पायो</u>

1

भव्य-दिव्य संदेश बतायो,
काशी मरणमुक्ति दिखलायो।
मनोज बंधु रश्मी के मध्ये,
न्यारी वाणी प्रगटायो।।

2

गहिर बात गंभीर बतायो,
जली चिता से राह दिखायो।
डेढ़ सेर भस्मी बिच मध्ये,
शिवलिंगी श्रृंगार करायो।।

3

भीतर-बाहर झाँकि दिखायो,
गहरे भीतर डूबि लखायो।
महा मनुज चाण्डाल निमित्ते
गहन-गहिर अति ग्रन्थ रचायो।।

4

प्रणव जाप ओंकार बतायो,
काशी विश्वनाथ प्रगटायो।

जो तन में शिव मूल न खोजा,
उनको सद्गुरु गेह बतायो।।

5

मन को भीतर मूल पठायो,
अद्भुत दर्शन शोध दिखायो।
हे रश्मी मनोज तुम बंधू,
कालजयी सद्बुद्धि पायो।

6

हममें-तुममें भेद मिटायो,
हम-हमार बिच प्रभू दिखायो।
निर्गुन प्रभु सर्वव्यापी मध्ये,
महा मनुज को खोजि दिखायो।।

संकेत:- महा = पुस्तक का केन्द्रीय नायक, गेह= घर, शिवमूल= आत्म-तत्व

शीर्षक :- मनोज रश्मि बिच गिरा समानी

1

बेधहिं सकल देह अब मानी,
काशी मरण मुक्ति पढ़ि जानी।
लेखक दुधि अद्भुत गंभीरा,
मनोज-रश्मि बिच गिरा समानी।।

2

शिव कर वास काय जग जानी,
ओमित्याक्षर ब्रह्म महानी।
सब में मालिक एकै समझो,
शिर्डी साँई अति-प्रज्ञानी।।

3

मन अलगी करि करै बयानी,
बौद्ध बुद्ध शरणं जग जानी।
जिनने मन भेजा तन मूलम्,
उनने प्रीती बाजी जानी।

4

असंग-अरुप-अडोल प्रभु मानी,
सर्वोत्तम तत् निर्गुन जानी।
एतद्-चैतद् ना कुछ दूरी,
मन नष्टे काया शिव जानी।।

5.

जाग्रत-स्वप्न थका मनमानी,
सुषुप्ति मध्य मन पूर नशानी।
मन को मारि गगन चढ़ि साधू,
फूटा कुंभ जल जलहिं समानी।।

संकेत-: तनमूलम्= आत्मतत्व, एतद्= आत्मा, चैतद्= परम-तत्व (सर्वव्यापी परम सत्ता)

शीर्षक :- मन को महामौन बनवायो

1

महाकाल श्मसान दिखायो,
मृत्यु-देव से बात सधायो।
तन काशी शिव अमर-अरूपा,
शिर्डी साँई भेद बतायो।।

2

मृत्यु लोक से मरण भगायो,
चिता-धधक अंगार दिखायो।
ईश अलख-निर्गुन गंभीरा,
प्रभु में प्रभु से बात सधायो।।

3

उत्तर बाहिनि गंग दिखायो,
काशी नगरी धवल बनायो।
शिव भोले काशी घट वासी,
गगन गंग नभ गिरा सुनायो।।

4

कुण्ड लोलार्क गहन दिखायो,
ची कुण्ड अति भव्य बतायो।
लहर तार कबिरा प्रज्ञानी,
शिव पूजक तैलंग सुझायो।।

5

शिर्डी में साँई प्रगटायो,
लेखनि सरस्वती पकड़ायो।
मरण-मुक्ति काशी में संभव,
पोथी पूर मुकम्मल पायो।।

6

काशी-काबा तनहि दिखायो,
मन को महा-मौन बनवायो।
हिरा गुफा तन हीरा प्रगटा,
बसन फाड़ि निर्वसन बनायो।।

डॉ. परशुराम तिवारी
प्राध्यापक एवं
स्नातकोत्तर दर्शन विभागाध्यक्ष
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)
मोबा.नं.- 9179464530